सक्रिय टीबी का रोग शरीर में कहीं भी हो सकता है, जैसे कि फेफड़े, फुप्फुसावरण, गला, लसिका ग्रंथि, गुर्दे, हड्डीयां, दिमाग, रीढ़ तथा पेट।

ट्युबरक्युलोसिस (क्षय) रोग

टीबी रोग क्या है?

जब प्रतिरक्षा तंत्र कमज़ोर हो जाता है तब टीबी के जीवाणु सक्रिय हो सकते हैं। वे बढ़ते हैं, फैलते हैं और शरीर के ऊतक का नाश कर देते हैं। कुछ लोग टीबी के जीवाणु का संदूषण लगने के थोडे ही समय में बीमार हो जाते हैं तो कई लोग काफ़ी सालों तक बीमार नहीं होते।

टीबी शरीर में कहीं भी हो सकता है, जैसे कि फेफड़े, फुप्फुसावरण, गला, लसिका ग्रंथि, गुर्दे, हड्डीयां, दिमाग, रीढ़ तथा पेट। सामान्यत: जिन्हें सक्रिय टीबी होता है, वे प्राय: अस्वस्थता का अनुभव करते हैं, उन्हें लक्षण दिखाइ देते हैं। उन्हें टीबी के उपचार व रोग से मुक्ति दिलाने के लिये दवा दी जाती है। वे ६ से १२ महिनों तक या उस से भी अधिक लंबे समय तक दवा लेते हैं.

सक्रिय टीबी रोग के क्या लक्षण हैं?

सक्रिय टीबी रोग के **सब से आम लक्षणों** में शामिल है:

- बुखार, ठंड लगना
- वज़न का कम होना, खाने में अरुचि
- कमज़ोरी, थकान
- रात में पसीना आना

जिन्हें **फेफड़ों का, फुप्फुसावरण या गले का टीबी** होता है, उन्हें ये अनुभव भी होता है:

- खाँसी होना या अगर पहले से खाँसी हो तो उस का बदतर होना और ३ सप्ताह या उस से भी अधिक लंबे समय तक जारी रहना
- खाँसी में बलगम या खून का निकलना
- छाती में दर्द होना

जिन्हें **फेफड़ों से बाहरी हिस्से का टीबी** होता है, उन्हें ये महसूस होता है:

- हड्डीओं में, जोड़ों में, पेट में, पीठ में बेवजह दर्द जो बन्द ही नहीं होता
- सूजन, अकसर गरदन की एक तरफ़
- हड्डीओं में या जोड़ों में सूजन
- सरदर्द, गरदन में तनाव/कड़ापन, चक्कर आना

जिन्हें **फेफड़ों का, फुप्फुसावरण का या गले का टीबी** होता है, वे संक्रामक होते हैं और अपनी खांसी, छींक, बोलने, हंसने, गाने व सुषिर वाद्य बजाने से वे टीबी के जीवाणुओं को दूसरों में फैला सकते हैं। दूसरों में टीबी के जीवाणुओं को फैलते हुए रोकने के लिये खास एहतियात बरतनी ज़रुरी है। पब्लिक हेल्थ नर्स आप को क्या सावधानी और कब तक उसे बरतनी चाहिये इस के बारे में सिखायेगी.

फेफड़ों से बाहरी हिस्से का टीबी सामान्यत: संक्रामक नहीं होता है और वह दूसरों में फैल भी नहीं सकता क्यों कि टीबी के जीवाणु हवा में जा ही नहीं सकते कि दूसरों की साँस में वे समा पायें। आम तौर पर उस के लिये कोई खास सावधानी बरतने की आवश्यकता नहीं है।

ट्युबरक्युलोसिस (क्षय) रोग..जारी

टीबी रोग का निदान कैसे होता है?

डॉक्टर आप से सवाल पुछ कर, आप की चिंताओं को सुन कर और डॉक्टरी परीक्षण एवं शारीरिक जाँच करने के बाद टीबी रोग का निदान करता है।

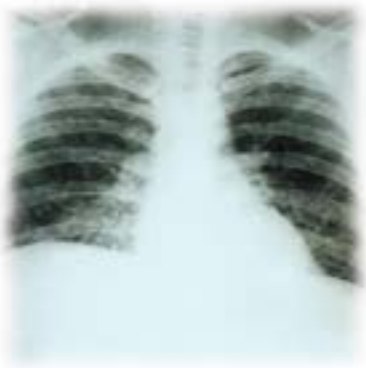

- मेडिकल हीस्ट्री - भूत काल में टीबी संक्रमण या रोग होने के हादसे, किसी टीबीग्रस्त व्यक्ति से अतीत में संबंध रहा हो, संक्रमण या रोग का ख़तरा (रीस्क फेक्टर), दूसरी स्वास्थ्य संबंधित समस्यायें तथा ली गई दवायें
- लक्षण- अपने बदन में परिवर्तन आना
- छाती का एक्स रे, सीटी स्केन, एमआरआई स्केन - फेफड़ों में या शरीर के अन्य हिस्से में टीबी के निशान ढूंढने के लिये
- फेफड़ों में से बलगम (कफ) - रोग की संभावना को परखने के लिये लेब में भेजना
- ब्रोन्कोस्कोपी - एक परीक्षण जिस में फेफड़ों का अवलोकन किया जाता है और रोग की संभावना को परखने के लिये वहां से ऊतक या तरल पदार्थ को निकाला जाता है
- गेस्ट्रिक वॉशिंग - एक परीक्षण जिस में रोग की संभावना को परखने के लिये पेट में से तरल पदार्थ निकाला जाता है
- बायोप्सी - एक परीक्षण जिस में रोग की संभावना को परखने के लिये ऊतक का एक छोटा सा टुकड़ा निकाला जाता है

क्लिनिकल टीबी क्या होता है?

कभी कभी बलगम, ऊतक या शरीर के तरल पदार्थों के लेब परीक्षण टीबी के जीवाणुओं को नहीं बताते, मगर फिर भी मरीज़ से संबंधित उस की मेडिकल हीस्ट्री, उस के लक्षण, एक्स रे एवं दूसरे परीक्षणों पर से डॉक्टर को लगता है कि व्यक्ति को सक्रिय टीबी है। इसे 'क्लिनिकल टीबी' कहते हैं.

जब बलगम, ऊतक या शरीर के तरल पदार्थों के लेब परीक्षण टीबी के जीवाणुओं को बताते हैं, तब वह 'कल्चर-कन्फर्म्ड टीबी' या 'लेब-कन्फर्म्ड टीबी' है।

औषध-प्रतिरोधक टीबी क्या है?

जो जीवाणु किसी खास औषध से मारे जा सकते हैं उन्हें उस दवा से "संवेदी - सेन्सिटीव" कहा जाता है। जो जीवाणु किसी खास औषध से नहीं मारे जा सकते, उन्हें उस दवा के "प्रतिरोधक - रेज़िस्टंट" कहा जाता है।

टीबी का उपचार कई दवाओं से एक साथ किया जाता है, जो टीबी के जीवाणुओ को मार डालता है या उन्हें बढ़ने से रोकता है। जब टीबी के जीवाणु टीबी के उपचार में सामान्यत: प्रयोग में लाई जाने वाली एक या ज़्यादा दवाओं का प्रतिरोध करते हैं तो वह टीबी प्रतिरोधक माना जाता है। इस का मतलब ये है कि वे दवायें उन टीबी के जीवाणुओं को मार नहीं सकती ना ही उन्हें बढ़ने से रोक सकती हैं। आम तौर पर ऐसे औषध-प्रतिरोधक टीबी का उपचार करना ज़्यादा मुश्किल होता है। औषध-प्रतिरोधक टीबी से मुक्ति तो मिल सकती है, मगर उसे ज़्यादा समय लगता है और दवायें ज़्यादा सहगामी दुष्प्रभाव (साईड इफेक्ट्स) कर सकती है।

ट्युबरक्युलोसिस (क्षय) रोग..जारी

टीबी के उपचार में दो सब से अच्छी दवायें हैं, आइसोनायज़ीड और रिफ़ेम्पीन। जब टीबी के जीवाणु आइसोज़ियानीड और रिफ़ाम्पीन, दोनों के प्रतिरोधक बन जाते हैं तब वह "बहुविध औषध-प्रतिरोधक - मल्टि-ड्रग रेज़िस्टंट" (MDR-TB) टीबी होता है। जब टीबी के जीवाणु आइसोनियाज़ीड और रिफ़ेम्पीन के साथ साथ दूसरे खास एन्टीबायोटीक्स के भी प्रतिरोधक होते हैं तब वहै व्यापक रुप से औषध-प्रतिरोधक - एक्स्टेन्सिवली ड्रग रेज़िस्टंट (XDR-TB) होता है।

मुझे औषध-प्रतिरोधक टीबी किस तरह हो सकता है?

आप को औषध-प्रतिरोधक टीबी तब हो सकता है जब:

- अगर आप ने किसी औषध-प्रतिरोधक टीबी रोग वाले व्यक्ति से टीबी के जीवाणु अपनी साँस में लिये हों
- आप ने अपनी टीबी की दवायें ठीक से नहीं ली है जिस से टीबी के जीवाणु बदल गये हैं और दवा का प्रतिरोध कर रहे हैं
- आप को ग़लत दवा दी गई है या उस की ग़लत मात्रा दी गई है
- भूत काल में टीबी का उपचार किये जाने के बाद अब आप को फिर से सक्रिय टीबी हुआ हो

औषध-प्रतिरोधक टीबी को मैं कैसे रोक सकता / सकती हूं?

औषध-प्रतिरोधक टीबी की रोकथाम के लिये आप को:

- टीबी की दवाओं की हर एक खुराक (डोज़) को लेनी होगी
- जब तक आप का डॉक्टर या नर्स आप को दवा बन्द करने के लिये न कहें, आप को टीबी की दवायें लेते रहना है
- अपने आप को बेहतर महसूस करने के बावजुद भी आप को दवायें लेते रहना है। सभी जीवाणुओं को मारने के लिये और रोग से मुक्ति पाने के लिये कई महीनों लगते हैं।
- टीबी और औषध-प्रतिरोधक टीबी के उपचार के विशेषज्ञ डॉक्टर से मिलें